बी.ए – २ – सेम हिंदी माध्यम (पाश्चिमात्य राजनीतीक विचारक)

डॉ.सुशांत चिमणकर

जॉन स्टुअर्ट मिल

परिचय – व्यक्तीस्वतंत्रतावादी, अर्थशास्त्रज्ञ, इतिहासतज्ञ और प्रातिनिधिक लोकतांत्रिक व्यवस्था के समर्थन के रूप में जे.एस.मिल का वर्णन किया जाता है| जे.एस.मिल का जन्म २० मई 1806 को लंदन में हुवा| जे.एस. मिल के पिता जेम्स मिल बेन्थम के शिष्य थे| पिता से मिल को बेन्थम के उपयोगीतावाद का आदर्श ज्ञान प्राप्त हुआ| बेन्थम के बाद मिल को उपयोगीतावाद के समर्थन के रूप में प्रसिद्धी प्राप्त हुई| जे.एस.मिल आयु के 25 वर्ष में हेरीयट टेलर के संपर्क में आया| वह उसके मित्र टेलर की पत्नी थी| टेलर के मृत्यू के बाद जे.एस.मिल ने उससे विवाह के लिया|परंतु विवाह के सात साल बाद हेरियट टेलर की मृत्यू हो गई| उसने अपनी किताब 'ऑन लिबर्टी' पत्नी को समर्पित की| ई.स 1873 में जे.एस मिल की मृत्यू हुई|

मिल की ग्रंथ रचना –

1.Principles of Political Economy – 1848

2.Thoughts On Parliamentary Reforms – 1859

3.On Liberty – 1859

4.Consideration On Representative Government – 1860

5.Utilirianism – 1869

6.Essay On Religion – 1874

मिल के स्वतंत्रता संबंधी विचार –

जे.एस.मिल व्यक्तीस्वतंत्रता का प्रमुख समर्थक था| मिल के अनुसार व्यक्तित्व विकास के लिए स्वतंत्रता आवश्यक होने के कारण व्यक्ती का सुख और सामाजिक कल्याण साध्य करने के लिए स्वतंत्रता उपयुक्त है| 'ऑन लिबर्टी' इस प्रसिद्ध ग्रंथ से मिल ने स्वतंत्रता संदर्भ में चर्चा की है| मिल की संकल्पना उपयोगीतावाद से सानाब्न्धीत है|

स्वतंत्रता की विशेषताए –

१.व्यक्तिविकास के लिए स्वतंत्रता आवश्यक है | २. व्यक्ती स्वतंत्रता पर बंधन नही होने चाहिए | ३.समाज विकास के लिए स्वतंत्रता आवश्यक है | ४.आदर्श राज्य के निर्मिती के लिए स्वतंत्रता आवश्यक है| ५. स्व-संबधी और पर –संबधी कार्य के लिए आवश्यक है|

स्वतंत्रता के प्रकार – मिल ने स्वतंत्रता के दो प्रकार बताए है|

१.विचार और अभिव्यक्ती स्वतंत्रता २.कृती अथवा कार्य की स्वतंत्रता

१. विचार और अभिव्यक्ती स्वतंत्रता – (अ)सत्य की खोज के लिए (ब)सामाजिक परिवर्तन और कल्याण हेतू (क)अन्याय का निवारण हेतू (ड)सत्य की रक्षा और योग्यता सिद्ध करणे के लिए (ए)अधिकतम लोंगों का सुख और कल्याण के लिए |

२. कृती अथवा कार्य की स्वतंत्रता – (अ)स्व-संबधी अथवा व्यक्तिगत कार्य हेतू (ब)प्र-संबधी अथवा सामाजिक कार्य हेतू|

मिल की लोकतंत्र की संकल्पना –

जे.एस.मिल ने अन्य शासन की तुलना में लोकतांत्रिक शासन का विचार किया है | प्रातिनिधिक शासन के समर्थन में मिल द्वारा लोकतांत्रिक शासन को उत्कृष्ट बताया गया है| मिल के अनुसार 'लोकतंत्र व्ही है जिसमे सभी नागरिक प्रत्यक्ष रूप से शासनकार्य में सहभागी लेते है|

मिल के अनुसार जिस शासनव्यवस्था में सभी नागरिक प्रत्यक्ष रूप सहभागी होते है वह शासन अच्छा होता है| प्रत्येक नागरिक को सहभाग प्राप्त करने का समान अवसर लोकतांत्रिक शासनव्यवस्था में प्राप्त होता है| मिल के समय राज्य की जनसंख्या और राज्य का भूप्रदेश छोटा होने के कारण प्रत्यक्ष लोकतांत्रिक व्यवस्था योग्य थी| परंतु आधुनिक युग में विशाल जनसंख्या के कारण विश्व क्व सभी देशो में प्रत्यक्ष लोकतांत्रिक व्यवस्था सफल नही हो सकती| इसलिये मिलने प्रतिनिधिक लोकतांत्रिक शासन का समर्थन किया है|

मिल के संपत्ती संबधित विचार –

मिल व्यक्तिवादी और उदारमतवादी विचारों का समर्थक था| वह समय मुक्त अर्थव्यवस्था का समय था| इसलिए राज्य द्वारा व्यक्ती के आर्थिक कार्य में हस्तक्षेप नही होना चहिए यह विचार मिल के थे| मिल ने निजी संपत्ती का विचार करके यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया है की व्यक्ती को अपनी क्षमता का उपयोग और अपनी इच्छा नुसार उत्पादन करने का अधिकार है | व्यक्ती अपनी संपत्ती दुसरे व्यक्ती के नाम पर कर सकता है अथवा उसे डे सकता है और दुसरा व्यक्ती उस संपत्ती का स्वीकार कर सकता है अथवा उपभोग ले सकता है| मिल के अनुसार संपत्ती यह समाजिक संस्था होने के कारण मनुष्य जाती के विकास के लिए आवश्यक है| प्रत्येक व्यक्ती की क्षमता भिन्न होने के कारण विषमता यह एक सामाजिक आवश्यकता है| परंतु संपत्ती पर नियंत्रण के संदर्भ में अनेक मर्यादा है| मिलने केवल उदारवादी और व्यक्तिवादी तत्व का समर्थन न करते हुए मुक्त अर्थव्यवस्था का भी प्रसार किया है|

मिल के शासन संबधीत विचार

मिल के समय इंग्लंड के प्रातिनिधिक शासन में अनेक दोष थे| वह दूर करने के दृष्टी से कुछ उपाययोजना संबधी विचार 'ऑन रिप्रेझेंटेटिव्ह गव्हर्न्मेंट' इस ग्रंथ में मिल ने शासनसंबधी विचार स्पष्ट किए है|

प्रातिनिधिक शासन के प्रमुख तत्व

१. शासन कार्य में अधिकतम लोंगों का सहकार्य होता है|

२.संपूर्ण नागरीकों के पास नियंत्रण की शक्ती होती है|

३.निर्वाचित प्रतिनिधी द्वारा जनता का प्रतिनिधित्व होता है|

लोकतंत्र में सुधारणा हेतू उपाययोजना –

१.स्त्री मताधिकार होना चाहिए २. प्रमाणबद्ध प्रातिनिधीत्व मिलना चहिए| ३.साक्षर को मताधिकार मिलना चाहिए| ४.संपत्तीधारक लोंगो को मताधिकार का स्थान मिलना चहिए| ५.प्रतिनिधी की योग्यता स्पष्ट होनी चाहिए| ६.खुली मतदान पद्धती का अवलंब करना चहिए | ७.द्वीसदन व्यवस्थापिका का निर्माण करना चहिए| ८.संसद के कार्य में योग्य कानून की निर्मिती होनी चहिए| ९.विधी आयोग की निर्मिती, इसप्रकार मिलने प्रातीनिधिक लोकतंत्र के लिए विधी आयोग निर्मिती का सुझाव दिया है|

कार्ल मार्क्स

परिचय – वैज्ञानिक समाजवाद का जन्मदाता कार्ल मार्क्स का जन्म जर्मनी के द्विविज में ज्यू परिवार में ई.स १८१८ में हुआ| मार्क्स ने समाजवाद. अर्थशास्त्र और राजनीती शास्त्र का अध्ययन किया| परंतु जर्मन सरकार के उसके विरोधी विचार और लेखन के कारण फ्रेंच सरकार द्वारा फ्रांस के बाहर निकाल दिया गया | उसने बेल्जियम में 'साम्यवाद का घोषणापत्र' यह ग्रंथ १८४८ में पूर्ण किया| १८६७ में उसने 'दास कॅपीटल' यह ग्रंथ लिखा| 'इंग्लंड में औध्योगिक क्रांती होने के बाद संपूर्ण समाज अमीर और गरीब ऐसे दो वर्ग में विभाजित होने के कारण मजदूर वर्ग का परिणाम मार्क्स पर हुआ|

मार्क्स की ग्रंथ रचना –

१.The Poverty of Philoshopy – 1847

2.The Communist Manifesto – 1848

3.The Critique of Political Economy – 1859

4.Value, Price and Profit – 1865

5. Das Capital – 1867

6. The Civil War in France – 1870-71

7. Class Struggle in France –

मार्क्स के विचारों पर प्रभाव –

१ हेगेल के तत्वज्ञान का प्रभाव था|

२.इंग्लंड और फ्रांस के समाजवाद का प्रभाव था|

३.तत्कालीन परिस्थिती का प्रभाव रहा |

४. समाचार पत्र व्यवसाय का प्रभाव रहा |

मार्क्स का द्वंद्वात्मक भौतिकवाद –

मार्क्स के साम्यवादी विचारों का आधार द्वंद्वात्मक भौतिकवाद है| हेगेल का अध्यात्मिक द्वंद्वात्मक सिद्धांत मार्क्स ने स्वीकृत किया था| मनुष्य के मन में एक विचार निर्माण होता है उस विचार को हेगेल वाद कहता है| इन विचारों में कुछ कमी होती है इसलियए उसके विरुद्ध दुसरा विचार तयार होता है उसे प्रतिवाद कहा जाता है और वाद तथा प्रतिवाद के संघर्ष से जो समन्वय निर्माण होता हे उसे संवाद कहा जाता है| संवाद आगे बढकर वाद के स्वरूप में विकसित होता है| यह पक्रिया निरंतर और विकास के रूप में परिवर्तीत होती है| इस प्रकार संघर्ष के माध्यम से विश्व का विकास होता है|

द्वंद्वात्मक पद्धती द्वारा होनेवाले विकास संबधी कार्ल मार्क्स ने तीन नियम स्पष्ट किए है |

१. विकास यह द्वंद्वात्मक प्रक्रिया से होता है|

२. द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के अनुसार परिवर्तन मात्रात्मक और गुणात्मक स्वरूप का होता है|

३.विश्व के वस्तूओ में तत्वों की एकता होती है | वस्तू एक दुसरे से संबधित होती है तथा जन्म, मृत्यू और पुननिर्माण ऐसी प्रक्रिया होती है|

द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की विशेषताए –

१. गतिशीलता - द्वंद्वात्मक भौतिकवाद सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक वस्तू में गतिमानता होती है| इसलिये समय के साथ-साथ वस्तू में परिवर्तन होते रहता है | इसप्रकार परिवर्तन निरंतन सुरु रहता है|

२. सामाजिक क्रांती का महत्व – मार्क्स ने राजनीती क्रांती के तुलना में सामाजिक क्रांती को महत्वपूर्ण स्थान दिया है| उसके अनुसार राजनीतिक क्रांती से सत्ता एक वर्ग से दुसरे वर्ग की और हस्तांतरित होती है|

३. वस्तू में संघर्ष - द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के अनुसार प्रत्येक वस्तू में मौलिक स्वरूप का विरोध होता है | ऐसे विरोध का कारण वस्तू में संघर्ष होता है|

४. भौतिक विश्व का विचार – कार्ल मार्क्सने मुख्य रूप से भौतिक विश्व का विचार किया है| उसके अनुसार भौतिक विश्व और भौतिक पदार्थ यही सत्य है |

५. मात्रात्मक परिवर्तन के फलस्वरूप गुणात्मक परिवर्तन – मार्क्स के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद सिद्धांत के अनुसार वस्तू में परिवर्तन गुणात्मक और मात्रात्मक ऐसे दोनोंभी स्वरूप में होता है|

मार्क्स का वर्ग संघर्ष का सिद्धांत –

कार्ल मार्क्स के अनुसार 'मनुष्य जाति का वर्ग संघर्ष' का इतिहास है| मनुष्य समाज में प्रारंभिक रूप से दो वर्ग का अस्तित्व था| एक वर्ग संपत्तीधारक (पुंजीवाद) और दुसरा वर्ग मजदूर का वर्ग था| आर्थिक विषमता के आधार पर दो वर्ग निर्माण होते है| दोनो वर्ग अपना (हित) साध्य करने का प्रयास करते है| दोनो वर्ग के परस्परसंबंध परपस्परविरोधी होने के परिणाम स्वरूप दोनों वर्ग में संघर्ष निर्माण होता है| समाज की प्रगती (विकास) होता है| संघर्ष के माध्यम से क्रांती और समाज में परिवर्तन होता है|

मार्क्स ने पुंजीवादी समाज का सूक्ष्म विश्लेषण किया है| उसके अनुसार समाज का आर्थिक आधार समाज के राजनीतिक, धार्मिक, सांकृतिक, कानूनी आधार तथा विचारधाराओं को निर्धारित करता है| आर्थिक आधार में मुख्यत: उत्पादन की शक्तीया तथा उत्पादन के संबध शामिल किए जाते है| उत्पादक के संबंध के आधार पर समाज का वर्ग विभाजन स्पष्ट होता है|

वर्ग संघर्ष के कारण –

१.आर्थिक विषमता २.मजदूर वर्ग का दुरपयोग ३.अधिकतम लाभ प्राप्त करने की प्रवूत्ती ४.परस्परविरुद्ध हितसंबंध ५.पुंजीवादी वर्ग की स्थितीशिलता ६.उत्पादक साधन का केंद्रीकरण

कार्ल मार्क्स के राज्य संबधी विचार -

मार्क्स के राज्यसंबंधी विचार अन्य दृष्टीकोन से विभिन्न और विशेतापूर्ण है| मार्क्स के अनुसार राज्य यह प्राकृतिक संस्था नही है| लोगो के सामान्य इच्छा से राज्य की निर्मिती नही हुई है अथवा संघर्ष मिटाने के दृष्टी से राज्य का निर्माण नही हुआ है| राज्य यह एक कृत्रिम संस्था है तथा उद्देश पूर्ती के लिए राज्य की निर्मिती हुई है| मार्क्स वर्ग परिप्रेक्षय के दृष्टी से राज्य का विचार करता है| मार्क्स के अनुसार समाज का विभाजन दो परस्परविरोधी वर्ग में होने के बाद राज्य का निर्माण हुआ| एक वर्ग के हाथ में उत्पादक का नियत्रण प्रस्थापित हुआ जिसे पुंजीवादी वर्ग कहा जाता है और दुसरा वर्ग मजदुरों का था जो अपना श्रम बेचकर संपत्ती प्राप्त करता था| निजी संपत्ती के कारण इन दोनों वर्ग में संघर्ष निर्माण हुआ|

मार्क्स के अनुसार राज्य शक्ती पर आधारित एक ऐसी संरचना और संघटन है, जिसका कार्य प्रभावशाली वर्ग के हितसंबध की रक्षा करना और मजदूर वर्ग का शोषण करना है|

मार्क्स के राज्य संबधित विचार में निम्मलीखीत तत्व महत्वपूर्ण है|

१.राज्य यह प्रभावशाली वर्ग के कल्याण का साधन है| २.राज्य यह वर्गशोषण का साधन है| ३.पुंजीवादी वर्ग द्वारा राजनीतिक सत्ता का दुरपयोग ४.वर्गसंघर्ष का संबध ५.परस्पर विरुद्ध हितसंबध ६.अमीर वर्ग की हितसुरक्षा

मार्क्स का अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत –

मार्क्स ने 'दास कॅपीटल' इस ग्रंथ में अतिरिक्त मूल्य सिद्धांत का विश्लेषण किया है| मार्क्स द्वारा इस सिद्धांत का विश्लेषण करने का उद्देश पुंजीवादी वर्ग द्वारा मजदूर वर्ग का शोषण कीस प्रकार से होता है यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है | इसलिए इस सिद्धांत को आर्थिक सिद्धांत से राजनीतिक सिद्धांत कहना योग्य होगा| मार्क्स के इस सिद्धांत को श्रममूल्य का सिद्धांत कहा जाता है| क्योंकी किसी भी वस्तू का मूल्य उस वस्तुपर खर्च होनेवाले श्रम से निश्चित होता है ऐसा मार्क्स का कहना है|

मार्क्स का अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत रिकार्डो के श्रममूल्य सिद्धांत की सुधारित आवृत्ती कहा जाता है| इसलीए पुंजीवादी व्यवस्था में मजदूर वर्ग के शोषण का विश्लेषण करनेवाला सिद्धांत है ऐसा कहा जा सकता है|

मार्क्स के अनुसार मूल्य निर्धारित करने की दो पद्धतीया होती है| एक उपयोगिता मूल्य और दुसरी विनिमय मूल्य है| उपयोगिता का अर्थ मनुष्य की इच्छा पूर्ती से है|

मार्क्स के अनुसार अतिरिक्त मूल्य का अर्थ पुंजीवादी वर्ग द्वारा श्रमिक वर्ग का शोषण है|

वस्तू की किंमत – मजदूर की मजुरी = अतिरिक्त मूल्य

श्रमिक का शोषण करने के लिए पुंजीवादी वर्ग निम्म मार्ग का उपयोग करते है|

१.श्रमिक वर्ग के मजबुरी का फायदा उठाकर अधिक परिश्रम लेकर श्रमिक वर्ग का शोषण करता है|

२. श्रम नाशवंत होता है, इसलिए श्रमिक वर्ग का शोषण पुंजीवाद वर्ग करता है|

३. उत्पादन बंद रखना|

इसप्रकार पुंजीवादी वर्ग अतिरिक्त मूल्य प्राप्त करके अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने का प्रयत्न करता है|

सराव हेतू प्रश्न

रिक्त स्थान की पूर्ती करके वाक्य फिरसे लिखीये |

१.प्लेटो की न्याय की संकल्पना ..... वर्ग पर आधारित है| (दो, तीन, चार, पाच)

२.ॲरिस्टॉटल के गुरु ..... थे| (प्लेटो, बेन्थम, जे.एस.मिल, साटक्रेटीस)

३.उपयोगीतावाद का समर्थक.....को कहा जाता है| (जे.एस.मिल, ॲरिस्टॉटल, प्लेटो, मार्क्स)

४.मार्क्स ने .....इस ग्रंथ में अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत स्पष्ट किया है| (The Politics, Das Capital, The Poverty of Philosophy, The Communist Manifesto)

दीर्घोत्तरी प्रश्न

१.प्लेटो के आदर्श राज्य का वर्णन किजीए |

२.ॲरिस्टॉटल के राज्य संबधी विचार स्पष्ट किजीए |

३.मिल के संपत्ती के संदर्भ में विचार स्पष्ट किजीए |

४.मार्क्स के राज्यसंबंधी विचार स्पष्ट किजीए |

लघुत्तरी प्रश्न

१.प्लेटो का स्त्री साम्यवाद

२. ॲरिस्टॉटल के दास्यप्रथा संबधी विचार

३.मिल के प्रातिनिधिक शासन व्यवस्था संबधी विचार

४.मार्क्स के अनुसार वर्ग संघर्ष के कारण

संदर्भ –

१.राजनीतिक सिद्धांत एवं पाश्चिमात्य राजकीय विचार – डॉ.अमर बोंद्रे –

२.राजनीतिक सिद्धांत व राजनीतिक विचारक – प्रा. अल्पना वैद्य – साई ज्योती पब्लिकेशन नागपूर, प्रथम आवृत्ती २०१४, ISBN – 978-93-81432-88-4